International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 48-50

अहिंसक जीवन शैली की व्यावहारिकता : मानव समाज की समरसता का आधार - जीवन मूल्य के सन्दर्भ में एक सूक्ष्म विश्लेषण

मेधावी शुक्ला

अनुसंधान अध्येता गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में मानव जीवन की उस महान परम्परा को उल्लेखित किया गया है जिसमें वह धर्म के सर्वाधिक अनुकरणीय सिद्धांत से अनुप्राणित होते हुए गतिशील रहता है। मनुष्यता की रक्षा और सामाजिक समरसता के आधार स्तम्भ के रूप में प्राचीनतम से आधुनिकतम तक मानव के समीप, मानस को अभिप्रेरित करने हेतु " अहिंसा परमो धर्म : " की विराट स्वीकारोक्ति ही है। आज एक मनुष्य को अहिंसक जीवन - शैली आत्मसात करते हुए वर्तमान जीवन की विभिन्न चुनौतियों के समाधान के मुख्य कारक समदृश्य सामाजिक समरसता हेतु अपनाना आवश्यक है। अहिंसक जीवन - शैली के प्रति गहरी आस्था विकसित हो जाने पर निजी जीवन की निष्ठा स्वयं के प्रति पवित्र - भाव, भासना, भावना एवं भाषा के विविध अभिव्यक्त स्वरुप से होती है जिसमें स्व कल्याण से सर्व कल्याण का मनोभाव पूर्ण मनोयोग से संप्रेषित होता है। यह शोध आलेख अहिंसक जीवन - शैली को सामाजिक समरसता के लिए एक प्रस्थान बिंदु के रूप में प्रतिपादित करता है जिसके परिदृश्य में एक मनुष्य का पूर्णतया अहिंसक हो जाना जीवन की अनिवार्यता होती है तभी वह सामाजिक समरसता के लिए आधारभूत भूमिका का निर्वहन करने में सक्षम सिद्ध हो सकता है। प्रस्तुत शोध आलेख में अहिंसक जीवन - शैली को सामाजिक समरसता के आधार स्वरुप जिन मानदंडों को सम्मिलित किया गया है उनमें मानव समाज की समरसता का स्वरुप; अंतिम सत्य की मान्यता का दबाव; सृजन की व्यापक उत्पत्ति का मूल्यांकन ; मानव कल्याण का व्यवहार पक्ष ; प्रमुख है जो अहिंसक जीवन - शैली की पुनर्स्थापना में विशिष्ट योगदान देते है जिससे सामाजिक समरसता का पवित्र - भाव मानव जीवन के व्यवहार पक्ष में क्रियान्वित होना सहज हो सके।

मूल शब्द: भारतीय सुसंस्कृत, स्त्री संवेदना।

प्रस्तावना

नव समाज की समरसता का स्वरुप

जीवन की व्यापकता में अधिकार एवं कर्तव्य का स्वरुप सदा से ही वसुधैव कुटुम्बकम की विराट अवधारणा से सम्बद्ध रहा है जिसमें अहिंसक जीवन शैली को सामाजिक समरसता का आधार मानकर निजी जीवन के व्यवहार पक्ष में स्वीकार किया जाता है। मानव समाज की संरचना और उसकी गतिशीलता में व्यक्ति, व्यवस्था, कार्यपालन एवं न्यायपालन का विशिष्ट योगदान रहा है जिसमें व्यक्तियों के सामूहिक विकास हेतु लघु एवं वृहद् मानदंड अर्थात् नियमों एवं उपनियमों का उल्लेख देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार विवेचित किया गया है। किसी मनुष्य के भीतर आंतरिक अनुशासन के उपबंधों की बात करें तो सृष्टि के विभिन्न धर्मों में से किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय, पंथ एवं मार्ग का अनुसरण करते हुए जीवन जीने की स्वतंत्रता का अधिकार संविधान में प्रदान कर दिया जाता है लेकिन इस व्यक्तिगत स्वतंत्रता में किसी अन्य मनुष्य को कष्ट, दुःख या पीड़ा की स्थितियां निर्मित नहीं होनी चाहिए इस तथ्यगत सत्य का उल्लेख भी वर्णित रहता है। मानव स्वभाव की मनोगत पृष्ठभूमि से जुड़े मनोवैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय एवं दार्शनिक व्याख्या के सन्दर्भ एवं प्रसंगों के तर्कसंगत स्वरुप के अतिरिक्त कुतर्कों तथा बाध्यकारी विवेचनाओं और उसके अनुपालन के दबाव से मुक्ति हेतु विभिन्न राष्ट्रों के संवैधानिक नियमों में व्यक्तियों को अनुशासित बनाये रखने में वहां की व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका द्वारा अधिकार एवं कर्तव्यों का पक्ष निर्धारित किया जाता है। अहिंसक जीवन शैली मानवीय आचरण का वह सबल पक्ष है जिसमें वह एक मानव की उपस्थिति के अस्तित्व को स्वीकार करता है जो विचार एवं भावनाओं का सृजन करते हुए स्वयं के होने के दावे को अपनी सात्विक गतिविधियों के माध्यम से स्थापित करने का प्रयास करता है। एक व्यक्तित्व का अस्तित्व सामाजिक पृष्ठभूमि में यथार्थ के धरातल पर ' सह - अस्तित्व ' की भूमिका में ' सर्व - धर्म समभाव ' के स्वरुप में होता है तो वह सदा स्वागतेय होता है। जीवन की पावनता जब मनुष्यता के मध्य ' सर्व भवन्तु सुखिनः.....' के व्यावहारिक संस्करण प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त कर लेती है तब " सामाजिक समरसता " का जीवंत हो जाना पूर्णत: नैसर्गिक हो जाता है।

अंतिम सत्य की मान्यता का दबाव

एक मनुष्य अहिंसक जीवन - शैली की गरिमा को सुरक्षित एवं संरक्षित बनाये रखने के लिए भय, प्रेम एवं सामाजिक दबाव के साथ जीवन के दार्शनिक पहलुओं का भी अध्ययन करता है जिससे वह सामाजिक कल्याण एवं विकास के कार्यों में स्वयं की सहभागिता को सुनिश्चित कर सके। समाज में जब अहिंसक जीवन शैली के प्रतिपादन की स्थिति निर्मित होती है तब स्वयं को उच्चता के समीप आंकने का प्रचलन अंततः समाज तक यह सत्य उद्घाटित करा देता है कि स्वयं को सर्व अर्थात् सब - कुछ मानकर "अहम ब्रह्मास्मि"... का उद्घोष कर देना सामाजिक समरसता को चुनौती देने का पर्याय बन जाता है। मनुष्य द्वारा स्वयं की अभिव्यक्ति चाहे वह मनन - चिंतन एवं अंततः वर्णन के स्वरुप में प्रतिपादित होती है तब व्यक्ति द्वारा स्वयं के सृजन को अंतिम सत्य मानकर उसे बल - पूर्वक प्रचारित - प्रसारित करने से समाज में सामाजिक समरसता का अभाव उत्पन्न हो जाता है। अहिंसक जीवन शैली एक मनुष्य को इस बात की अनुमति कभी प्रदान नहीं करती जिससे व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने के लिए सर्व को भला - बुरा कहते हुए दूसरों की निरंतर आलोचना करता रहे। यदि व्यक्ति के सकारात्मक प्रयास के द्वारा विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय एवं पंथ में प्रविष्ट होकर गहन अध्ययन से कुछ सत्य एवं महत्वपूर्ण जीवन जीने के पहलू प्राप्त करने के वास्तविक ज्ञान से सदैव स्वयं के स्वमान अर्थात् कर्तव्यनिष्ठ स्वरुप में अभिव्यक्ति प्रदान करने का जीवन पर्यंत प्रयास किया जाना सामाजिक समरसता को पुनर्स्थापित करने का महत्वपूर्ण कारण बन जाता है।

सृजन की व्यापक उत्पत्ति का मूल्यांकन

अहिंसक जीवन शैली के द्वारा सामाजिक सदभाव की स्थितियां जब निर्मित होती हैं तब व्यक्तिगत दृष्टिकोंण में समालोचना का भाव, श्रेष्ठ को उठाने का भाव तथा अच्छाई के प्रति आस्था का भाव उत्पन्न करना सामाजिक समरसता को पूर्णता प्रदान करता है। सामाजिक विडंबनाओं की पृष्ठभूमि को उस समय अधिक आघात लगता है जिस समय देश काल एवं परिस्थिति के अनुसार विभिन्न धर्मग्रंथों, आध्यात्मिक ऋचाओं एवं मानव कल्याण हेतु रचित विभिन्न साहित्य के सृजन की व्यापक उत्पति हुई परन्तु जो कुछ लिखा गया वह उस देश काल एवं परिस्थिति के अनुसार नि:स्वार्थ भाव से विवेचित नहीं किया गया फलस्वरुप सामाजिक समरसता का अभाव धीरे - धीरे समाज में निर्मित हो गया। अहिंसक जीवन शैली की व्यापकता को स्वीकार करते हुए एक मनुष्य को श्रेष्ठ संकल्पों की रचना को विकसित करना होगा तब श्रेष्ठ विकल्पों की वृहद् संकल्पना का सृजन संभव हो सकेगा और श्रेष्ठता का व्यावहारिक स्वरुप सामाजिक समरसता के रूप में क्रियान्वित होने की स्थितियों में परिणित हो सकेगीं। व्यावहारिक जगत में ' श्रेष्ठता ' के उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए राजयोग के अवदान को निजी मानस से संबद्ध कर सर्व मानव आत्माओं के हितार्थ प्रयोग करने की मन : स्थिति व्यक्तिगत स्वरुप की शक्तिशाली भूमिका को सामाजिक समरसता के लिए निर्धारित कर सकती है। अहिंसक जीवन - शैली की आवश्यकता ने जहाँ मानव को मानव से जोड़ने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मदद प्रदान की है वहीँ राजयोग की विराट परम्परा, स्वरुप एवं व्यावहारिक प्रयोग ने सामाजिक समरसता की व्यापक पृष्ठभूमि को मानव कल्याण हेतु सहज रूप से प्रस्तुत किया है।

मानव कल्याण का व्यवहार पक्ष

राजयोग की प्राचीन परम्परा एक मनुष्यात्मा को स्वयं का साक्षात्कार कराने में सक्षम होती है और अहिंसक जीवन - शैली के प्रति आस्था बनाए रखते हुए जीवन के उजले स्वरुप से आत्मिक ऊंचाई की प्राप्ति को प्रायोगिक रूप से सुनिश्चित करने में मददगार होती है। मानव समाज में समरसता का माधुर्य अहिंसक जीवन - शैली के द्वारा सृजित होता है तथा अहिंसक जीवन शैली की श्रंखला को पुरुषार्थ की परिणिति में क्रमशः पुण्यात्मा, धर्मात्मा, महात्मा एवं देवात्मा की अवस्था के सन्दर्भ में स्वीकार किया जा सकता है जो आत्मिक उत्थान के परिष्कार द्वारा संभव होता है। अहिंसक जीवन - शैली के अंतर्गत आत्मानुभूति का पक्ष इतना सबल होता है कि एक मनुष्य स्वयं की श्रेष्ठता के संबल से अपने जीवन को आलोकित करते हुए परमात्मानुभूति की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है। सामाजिक समरसता के आधार स्तम्भ के रूप में समाज द्वारा जब अहिंसक जीवन - शैली को स्वीकार कर लिया जाता है तब इस विशिष्ट शैली के आधार पक्ष को सुदृढ़ करने के लिए राजयोग के अवदान को महत्व प्रदान किया जाता है। राजयोगी जीवन के लिए जिन अनिवार्यताओं की प्रासंगिकता होती है उनमें मुख्य रूप से शुद्ध अन्न, सतसंग, ब्रह्मचर्य एवं दैवीय गुणों की धारणा का प्रबल पक्ष नीहित होता है। आत्मिक उत्कृष्टता अतंत: राजयोगी जीवन की आधारशिला होती है जिसमें अहिंसक जीवन - शैली पुष्पित और पल्लवित होती है जो जीवन के सद्व्यवहार से प्रस्फुटित होते हुए सामाजिक समरसता का आधार बन जाती है।

निष्कर्ष

इस शोध आलेख की संदर्भित पृष्ठभूमि अहिंसक – जीवन शैली के व्यापक प्रसंगों से होकर गुज़रती है जिसके अंतर्गत मानव समाज की समरसता एक महत्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु है जो जीवन मूल्य को सुरक्षित रखते हुए जीवन पर्यंत मानवीय मूल्यों के संरक्षण को अपनी आराधना का केंद्र बिंदु मानकर गतिशील होने की चेष्टा करते है जिसमें मानव कल्याण का व्यवहार पक्ष सहज रूप से सम्मिलित रहता है। अहिंसक जीवन - शैली मनुष्य को उसकी मनुष्यता बनाये रखने के लिए सदैव सत्यम - वद के प्रतिज्ञा स्वरुप हो ईमानदारी से क्रियान्वित करने की सीख प्रदान करती है जिसमें धर्ममं - चर का धारणात्मक पक्ष अनुशासन के प्रति गहन निष्ठा को रेखांकित करता है। अहिंसक जीवन - शैली के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में जहाँ मात्र देव भव : का पूज्य स्वरुप धरती के सहनशील व्यवहार पक्ष को प्रकट करता है वहीं पितृ देवों भव: का समर्पण स्वरुप आकाश की छत्रछाया को सदैव बनाये रखने में सहयोग प्रदान करता है जिसकी परिणिति समाज के सम्मुख आचार्य देव भव: के श्रद्धांजलि स्वरुप में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण आज्ञाकारीता के मूल्यों को सृजित कर नए मनुष्य के निर्माण द्वारा संपन्न किया जाता है। अतः शेष विराट सामाजिक संरचना को अहिंसक जीवन - शैली के प्रति अंतर्जगत से व्यावहारिक निष्ठा समर्पित करना सामाजिक समरसता को बनाए रखने के लिए अनिवार्य शर्त के रूप में स्वीकार करना होगा तभी मानव समाज द्वारा जीवन मूल्यों का अनुगमन स्व - कल्याण की आरंभिक अवस्था से मानव कल्याण की सम्पूर्णता को सुनिश्चित किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रसाद, भ. (1980) मनीषी की लोकयात्रा. वाराणसी : महामहोपाध्याय पंडित (गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) प्रकाशक – विश्वविद्यालय।
2. भावे, संत विनोवा. (1978) गीता प्रवचन. वाराणसी: प्रकाशन - सर्व सेवा संघ, राजघाट, संस्करण - 30, मार्च।
3. महाराज, श्री गों. (1979) प्रवचन पारिजात, प्रवचनों का संग्रह. संग्राहक - गो.सी. गोखले, हिन्दी अनुवादक - ब्रजमोहन दीक्षित, प्रथम संस्करण - 14, दिसम्बर।
4. लॉक,जान : (1981) मानव बोध, जयपुर : हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण।
5. विद्यार्थी, शंकर गणेश, (2005) ऍम. आई. राजस्वी. मनोज पब्लिकेशन।
6. वैकटरामैया, मु. (1998) श्री रमण महर्षि से बातचीत. आगरा: प्रकाशक शिव लाल एड अग्रवाल कंपनी, आगरा।
7. शर्मा, पंडित रा. (1998) वाड्मय भाग -1, महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-1 मथुरा: प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान, द्वितीय संस्करण।
8. शर्मा, पंडित रा. (1998) वाड्मय भाग -2, महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-2, मथुरा: प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान, द्वितीय संस्करण।
9. शर्मा, पंडित रा. (1998) वाड्मय, भारतीय संस्कृति के आधार भूत तत्व, मथुरा: प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान, द्वितीय संस्करण।
10. शर्मा, प्र. (2012) भावानुवाद, सत्य के प्रयोग (महात्मा गांधी की आत्मकथा) मनोज पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण।
11. शर्मा,पंडित रा. (1998) वाड्मय, साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान, मथुरा: प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान, द्वितीय संस्करण।
12. शर्मा,पंडित रा. (1998) वाड्मय, साधना से सिद्धि -1,मथुरा: प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान, द्वितीय संस्करण।
13. शास्त्री, वि. (2008) ज्ञान और कर्म, इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन।
14. शुक्ल अजय, (2011) विकास का मनोविज्ञान, प्रकाशक मानवीय विकास संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश।
15. शुक्ल, अजय, (2009) व्यवहार संबंध और व्यवहारिकता, भोपाल : प्रकाशक मानवीय विकास संस्था।
16. हबर्ड, रॉ. (2009) डायनेटिक्स मौलिक शोध - प्रबंध, प्रकाशन - हबर्ड, न्यू एरा (New Era) International.